बेटियाँ पावन दुआएँ हैं

- अजहर हाशमी

बेटियाँ, शुभ कामनाएँ हैं।
बेटियाँ पावन दुआएँ है।
बेटियाँ, जीनत हदीसों की।
बेटियाँ, जातक कथाएँ हैं।
बेटियाँ, गुरुग्रंथ की वाणी,
बेटिया, वैदिक ऋचाएँ हैं।
जिनमें खुद भगवान बसता है,
बेटियाँ, वे वंदनाएँ हैं।
त्याग, तप, गुण, धर्म, साहस की
बेटियाँ, गौरव – कथाएँ हैं।
मुस्कुरा के पीर पीती हैं।
बेटियाँ, हर्षित व्यथाएँ हैं।
लू लपट को दूर करती हैं,
बेटियाँ, जल की घटाएँ हैं।
इस प्रदूषण के जमाने में,
बेटियाँ, सुरभित फिजाएँ हैं।
दुर्दिनों के दौर में देखा
बेटियाँ, संवेदनाएँ हैं।

अभ्यास

1. कवि ने बेटियों को गौरव-कथाएँ क्यों कहा है ? स्पष्ट कीजिए।
2. 'जीवन में बेटियों का महत्व' विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
3. ''आज के बच्चे कल के नागरिक हैं'' विषय पर दस पंक्तियाँ लिखिए।
4. 'बेटियाँ' कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

योग्यता-विस्तार

शब्दार्थ

पावन = पवित्र। **दुआ** = आशीर्वाद। **जीनत** = रौनक, सजावट। **हदीश** = पैगम्बर के उपदेशों का संग्रह। **जातक कथाएँ** = बुद्ध के जन्म सम्बन्धी कथाएँ। **गुरुग्रंथ** = सिक्खों का धर्मग्रन्थ। **साहस** = हिम्मत। **पीर** = पीड़ा। **व्यथा** = दुख। **सुरभित** = सुगंधित। **दुर्दिन** = बुरे दिन। **वैदिक ऋचाएँ** = वेदों के छन्द।